
लघुपाराशरी।

श्रीमत्परा[illegible]ुनि विरचिता

भाषाटी[illegible]ङ्कृता।

[द]रभङ्गामण्डलान्तर्गत[illegible]वास- निवासि-ज्यौतिषा-
चार्य-ज्यौतिषतीर्थ-प[illegible]ष्टाचार्य-मैथिलपण्डित-

श्रीअ[illegible]पमिश्रेण

सं[illegible]धिता।

काशीस्थ-संस्कृतपुस्तकालयाध्यक्षशुक्लोपनामक-

श्रीरघुनन्दनप्रसादशर्म्मणा

22/c

प्रकाशिता।

॥ श्रीः ॥

श्रीमन्महर्षिपराशरमुनिप्रणीता

लघुपाराशरी ।

श्रीयुत् पं० रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल
बुक्सेलर-
कचौरीगली काशी
ने
छपवाकर प्रकाशित किया ।

सम्वत् १९७२ ।

पं० आत्माराम शर्म्मा द्वारा-
जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स काशी में छपा ।

प्रथमवार] [२,०००

ज्ञानमंदिर — जंगमवाडीमठ काशी

भूमिका।

इसकी टीका तो अनेकों प्रकार की हुई हैं परंतु ऐसे श्रेष्ठ ग्रंथ के अवलोकन से यह विदित होता है कि जितना ही इसके साथ रगड़ किया जाय उतनाही उत्तम सरल नवीन भाव निकलैंगे अस्तु ! यह विचार कर मैंने काशी के नामी ज्योतिषियों द्वारा इसकी टीका कराकर विद्वद्जन मंडली की सेवा में उपस्थित करता हूं।

यह बात समस्त ज्योतिषविद्यानुरागी जानते हैं कि ज्योतिषमें पाराशरी के समान कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं कि जिससे कारक मारक अच्छे प्रकारसे मिलता हो। जो कुछ महर्षि पाराशरजीने लिखा है वह मानो विधाताके अंक हैं। श्लोक तो ४२ ही हैं परन्तु भीतर जैसी जैसी क्लिष्टता कर दी है उसको पण्डितही जानते हैं। बड़ा भारी विचार का काम है। शतरंजकासा हिसाब है। बारह घर और नव गोट हैं इसको पण्डितजन अपनी २ बुद्धिके अनुसार विचार कर खेलते और फल बतलाते हैं ज्योतिष विचार में कुशाग्रबुद्धि की परम आवश्यकता है और किसी देवता का इष्ट भी हो तब काम चले कोरे ज्योतिषी की विध मिलना बड़ा दुष्कर है फिर ज्योतिषी भी ऐसा हो कि जैसा शास्त्र में कहा है यथा " द्विविधगणितमुक्तं व्यक्त-

मव्यक्त संज्ञं तदवगमननिष्ठः शब्दशास्त्रे पटिष्ठः। यदि भवति तदेदं ज्योतिषं भूरिभेदं प्रपठितुमधिकारी सोऽन्यथा नामधारी ॥ १ ॥" बहुत से शुष्क ज्योतिषी कारक मारक तो बदलाते हैं परन्तु वे समय का विचार पूर्णरीति से नहीं करते ज्योतिषियों को यह बात अवश्य चाहिये कि जिसको कारक मारक बतावें उसपर कुछ दृष्टि भी रक्खें कि जो बताया है वह होता भी है वा नहीं तब अभ्यास बढेगा और फिर राजयोग के विचार में यह देखें कि अमुक मनुष्य किस कुलका है क्योंकि राजा वही हो सक्ता है। जो राजकुल में होगा अन्यथा राजाके यहां आजीविका मिलेगा इसी प्रकार मारक के विचार में भी दूसरे सातवें घरकी दशा देखते ही सहसा यह न कहना चाहिये कि अमुक मनुष्य मरही जायगा प्रथम आयुका निश्चय करो कि पूर्णायु, मध्यायु वा अल्पायु में से कौनसी है? यदि मध्यायु वा पूर्णायु है और अल्पायु में ही मारकेश की दशा आ लगी तो केवल कष्ट देकर निकल जायगी। इस प्रकार अनेक प्रकार के विचार ज्योतिषी को विचारना चाहिये। आगे ईश्वर की माया वही जाने।

पं० रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल,

कचौरीगली, काशी।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

अन्वय--भाषाटीकासहिता

लघुपाराशरी।

सिद्धान्तमौपनिषदं शुद्धान्तं परमेष्ठिनः ॥
शोणाधरं महः किञ्चिद्वीणाधरमुपास्महे १

अन्वयः—औपनिषदं सिद्धांतं परमेष्ठिनः शुद्धान्तं वीणाधरं शोणाधरं किञ्चित् महः उपास्महे ॥१॥

नत्वा विश्वेशचरणौ नृभाषां तत्वबोधिनीम् ।
उडुदायप्रदीपस्य कुर्वे दिष्टविदां मुदे ॥

अर्थ—वेदान्तवाक्य जो उपनिषद् हैं उनसे प्रतिपादन किया गया अर्थात् ब्रह्मस्वरूप ब्रह्माजीका शुद्धान्त अर्थात् वाणीरूप कि जो वीणाको धारण किये हैं और जिसका रक्त अधर है ऐसे किसी अनिवचनीय तेजकी उपासना करते हैं ॥ १ ॥

वयं पाराशरीं होरामनुसृत्य यथामति ॥
उडुदायप्रदीपाख्यं कुर्म्मो दैवविदां मुदे २

अन्वयः—वयं दैवविदां मुदे पाराशरीं होराम् अनुसृत्य यथामति उडुदायप्रदीपाख्यं कुर्म्मः ॥ २ ॥

अर्थ—हम पाराशरी होराको अपनी बुद्धिके अनुसारज्योतिषियोंके प्रसन्नताके लिये नक्षत्रोंके फलको प्रगट करने वाले ग्रन्थको रचते हैं ।

फलानि नक्षत्रदशाप्रकारेण विवृण्महे ॥
दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता

अन्वयः--नक्षत्रदशाप्रकारेण फलानि विवृण्महे अत्र विंशोत्तरी दशा ग्राह्या अष्टोत्तरी न मता ॥३॥

अर्थ-- नक्षत्रदशाके प्रकार से पुत्र कलत्र धन आदिके फलों-को विचार कर प्रगट करते हैं यहां विंशोत्तरिदशाका ग्रहण है योगिनी दशाका ग्रहण नहीं है ॥ ३ ॥

नवग्रहोंकी दशा का प्रमाण और यथाक्रम उसके स्वामी कहते हैं ।

"रसदशाद्रिपुराणमहीभृतो विधुविहीननखा अगभूमयः । गिरिनखा रविचन्द्रकुजायुयुग्गुरुशनिज्ञककेतुसिताब्दकाः ॥" अर्थात् रस ६, दश १०, अद्रि ७, पुराण १८, महीभृत् १६, विधुविहीननख १९, अगभूमयः १७, गिरि ७, नख २० ये नव ग्रहोंकी दशाका प्रमाण है और इनके स्वामी इस प्रकार हैं कि सूर्य, चन्द्र, भौम, राहु, गुरु, शनि, बुध , केतु, शुक्र यंत्रमें स्पष्ट देखो ॥

ग्रह.	सू	चं.	मं.	रा	बृ	श.	बु.	के	शु	योग.
दशा वर्ष प्रमाण	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	१२०

अब दशा जाननेका प्रकार कहते हैं.

" कृत्तिकादिनवकत्रिकक्रमात् सूर्यचन्द्रकुजराहुमन्त्रिणः ।

१ दशा दो प्रकारकी हैं विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी अर्थात् योगिनी । उनमेंसे विंशोत्तरीका ग्रहण है ।

सौरिसोमसुतकेतुभार्गवा भमवर्तितदशाब्दनायकाः ॥ " अर्थात् कृत्तिकानक्षत्रसे अपने जन्मके नक्षत्रतक गिने और नवका भाग देनेसे क्रमपूर्वक सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु, जीव, शनि, बुध, केतु और शुक्रकी दशा होती है. जैसे जन्मनक्षत्र अनुराधा है तो कृत्तिकासे १५ नक्षत्र भये। इनमें ९ का भाग दिया ६ बचे शनिकी दशा भई। यंत्रमें स्पष्ट देखो.

सूर्य	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
कृ उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्र.	मृ चि. ध.	आ. स्वा. श.	पु. वि. पू.भा	पुष्य. अनु. उ.भा.	श्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अ.	पू.फा. पू षा भ.

अबविंशोत्तरी दशाबनानेकाप्रकारालिखते हैं

गतर्क्ष[1]की घडियोंको ६० गुणा करके पल जोडो और सर्वर्क्ष[2]की घडियोंको ६० गुणा करके पल जोडकर एक राशि करलो फिर गतर्क्षको जिस ग्रहकी दशा हो उससे गुणाकर सर्वर्क्षका भाग दो जो मिले वे वर्ष भये। फिर शेषको बारहसे गुणाकर सर्वर्क्षका भाग दो मास मिलेंगे। फिर शेषको ३० गुणाकर सर्वर्क्ष भाग दो दिन मिलेंगे। फिर शेषको ६० गुणा करके सर्वर्क्षका भाग दो घडी मिलेंगी। फिर शेषको ६० गुणा करो सर्वर्क्षका भाग दो पल मिलेंगे. इस प्रकार वर्ष, मास, दिन, घडी, पल, पूर्वजन्मके भुक्त आवेंगे। फिर जिस ग्रहकी दशा हो उसमेंसे घटानेसे इस जन्मका भोग्य रहेगा।

१ नक्षत्रका जितना भाग बीत गया हो। २ संपूर्ण नक्षत्र।

उदाहरण—कल्पना किया कि गतर्क्ष ४६। ४ है और सर्वर्क्ष ५७। २२ है। प्रथम गतर्क्ष ४६ को ६० गुणा किया तौ २७६० भये इनमें ४ पल जोडे २७६४ भये। अब यहां कल्पना किया कि शुक्रकी दशा २० वर्षकी है इससे गुणा किया तौ ५५२८० हुए। फिर सर्वर्क्षकी ५७ घडीको ६० से गुणा किया तो ३४२० भये इनमें २२ पल जोडे तो ३४४२ भये अब २० गुणित गतर्क्ष ५५२८० में सर्वर्क्ष ३४४२ का भाग दिया तो दो भाग हैं। प्रथम एक आया और २०८६० बचे फिर ३४४२ का भाग दिया ६ आये अर्थात् १६ वर्ष आये और शेष २०८ बचे। इनको १२ गुणा किया तो २४९६ भये इनमें फिर ३४४२ का भाग दिया तौ भाग नहीं लगता। इसलिये मासकी जगह शून्य आया। अब २४९६ को तीससे गुणा किया तो ७४८८० भये। इनमें ३४४२ का भाग दिया प्रथम दो वार गये। फिर शेष ६०४० में ३४४२ का भाग दिया तो एक आया अर्थात् २१ दिन मिले और शेष २५९८ रहे। इनको ६० गुणा किया तो १५५८८० भये। इनमें ३४४२ का भाग दिया तो प्रथम ४ घटी आई शेष १८२०० में फिर ३४४२ का भाग दिया तो ५ आये अर्थात् ४५ घडी मिली और शेष ९९० रहे। इन्हें फिर ६० गुणा किया तो ५९४०० भये। इनमें फिर ३३४२ का भाग दिया प्रथम एक वार गया शेष २४९८० बचे। इनमें फिर ३४४२ का भाग दिया ७ मिले अर्थात् १७ पल मिले और शेष ८८६ बचे इन्हें जाने दो इस प्रकार १६ वर्ष, शून्य मास, २१ दिन, ४५ घडी, १७ पल

मिले यह पूर्वजन्मका भुक्त हुआ । अब इसे शुक्रकी २० वर्षकी दशामें घटाया तो शेष ३ । ११ । ८ । १४ । ४३ । इस जन्म का भोग्य हुआ ।

पाराशरजीने जो विंशोत्तरीदशाका ग्रहण किया है उसकी पांच प्रकारकी भुक्ति कही है । यथा—"दशा चान्तर्दशा चैव तत्तदन्तर्दशा तथा । सूक्ष्मभुक्तिप्राणदशाप्येवं पञ्च दशाः स्मृताः ॥" उसमेंसे प्रथम ।

अब अन्तर निकालनेका प्रकार कहते हैं।

"स्वदशा रामगुणिता तद्दशा गुणिता पुनः । स्वरामभागतो लब्धं वर्षमासादिकं भवेत् ॥" अपनी मूलदशाकी संख्याको तीनसे गुणा करे जो गुणन फल आवे उसे पिंड मानो फिर इसको अपनी दशासंख्यासे गुणा करना फिर ३० का भाग देनेसे जो लब्ध हो वह वर्ष मासादि होते हैं ।

उदाहरण—जैसे जन्ममें सूर्यकी दशा है इसकी संख्या ६ को तीन गुणा किया तो १८ भये इसे पिंड मानो (यह सूर्यकी दशाके सब ग्रहोंके अन्तरमें काम आवेगा ।) फिर इसको दशा संख्या ६ से गुणा किया तो १०८ भये इसमें ३० का भाग दिया तो ३ मास मिले और शेष १८ दिन रहे । आगे चंद्रमाका अन्तर निकालनेमें पिंडको १० गुणा और मंगलकेमें ७ गुणा करेंगे इत्यादि जानो ।

अब प्रत्यंतरकी रीति लिखते हैं ।

अन्तरमें जो मास दिन हों उनको एक राशिकर

के जिसमें जिस ग्रहका प्रत्यन्तर निकालना हो उस की दशाके प्रमाण वर्षोंके आधेसे गुणा करो ६० का भाग दो तो प्रत्यन्तर हो जायगा ॥

उदाहरण-सूर्यका अन्तर ३ मास १८ दिन है। इनके दिन किये तो १०८ भये। इनको सूर्यकी दशाके ६ वर्षके आधे ३वर्षसे गुणा किया ३२४ भये इनमें ६० का भाग दिया तो ५ दिन आये और २४ घडी रही यही सूर्यके अन्तरमें सूर्यका प्रत्यंतर हुआ ऐसेही चन्द्रमाका करो। सूर्यमें चन्द्रमा ६ महीनेका है इसके दिन १८० इनको ३ गुणा किया ५४० हुए ६० का भाग दिया ९ दिन आये इत्यादि जानो।

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	१८
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	०

सूक्ष्म निकालनेकी रीति लिखते हैं।

प्रत्यन्तरके दिन घटी आदिकी घडियां कर लो फिर जिसमें जिस ग्रहका सूक्ष्म निकालना है उसकी दशाके प्रमाण वर्षोंके आधेसे गुणाकर ६० का भाग दो सूक्ष्म होगा।

उदाहरण—सूर्यका प्रत्यन्तर ५ दिन २४ घडी है इनकी घडी करी तो ३२४ हुई। फिर इनको सूर्यकी दशाके आधे ३ वर्षसे गुणा किया तो ९७२ हुए ६० का भाग दिया तो १६ घडी मिलीं और १२ पल रहे। यह सूर्यका सूक्ष्म हुआ ऐसेही और जानो

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० व.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	९ दि.
१६	२७	१८	४८	४३	५१	४९	१८	५४	२४घ.
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	० प.

अब प्राण निकालनेकी रीति लिखते हैं

सूक्ष्मके पल कर लो फिर जिसमें जिस ग्रहका प्राण निकालना हो उसकी दशाके प्रमाण वर्षोंके आधेसे गुणा करो और ६० का भाग दो प्राण निकलेगा ॥

उदाहरण-सूर्यका सूक्ष्म १६ घडी १२ पल है इनके पल किये तो ९७२ इनको सूर्यकी दशाके आधे ३ वर्षसे गुणा किया तो २९१६ हुए साठका भाग दिया ४८ पल आये ३६ विपल रहे । यही सूर्यका प्राण हुआ । अथवा प्राण जो कुछ हो उसे केवल तिगुणा कर दो शूक्ष्म हो जायगा ॥

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० व.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० मा.
०	०	८	०	०	०	०	०	०	० दि.
०	१	०	२	२	२	२	०	२	१६घ.
४८	२१	५६	३५	९	३३	१७	५६	४२	४२प.
३६	०	४२	४८	३६	५४	४२	४२	०	० वि.

अब अन्तरदशा आदि निकालनेकी बहुत सीधी रीति लिखते हैं ।

"रामैर्हताश्चार्कमुखग्रहाणां दशाब्दकास्ते दिवसा भवन्ति । दशासमानां खलु षष्ठभागः शुक्रस्य भुक्तिः

सकलग्रहेषु ॥ १ ॥ दशेश्वरंदिनैर्हीना शुक्रभुक्तिर्भवेच्छनेः । सैव हीना दशानाथदिनैश्चागोः स्मृता हि सा ॥ २ ॥ रहिता चैव सा ज्ञेया चन्द्रजस्य तु तैर्दिनैः । एवं हीना च सा ज्ञेया दशानाथदिनैर्गुरोः ॥ ३ ॥ अगोस्त्रिभागं रविभुक्तिमाहुः शुक्रस्य चार्द्धं हिमगोर्भवेत्सा । युता दशानाथदिने रवेस्तु भुक्तिर्भवे चैव कुजस्य केतोः ॥ ४ ॥ एवं समस्तग्रहभुक्तयस्तु कार्या दिनेशादिखगेश्वराणाम् ॥ ५ ॥ " अर्थात् सूर्यादि ग्रहोंकी दशाके वर्षोंको तिगुना करनेसे दिन होते हैं और दशाके वर्षोंका छठा भाग सब ग्रहोंमें शुक्रका अन्तर होता है और उसमें दशानाथके दिन घटानेसे शनिका अन्तर होता है । फिर इसमें दशानाथके दिन घटानेसे राहुकी अन्तर्दशा होती है, फिर इसमें दशानाथके दिन घटानेसे बुधका अन्तर होता है। फिर इसमें दशानाथके दिन घटानेसे गुरुका अन्तर होता है । फिर राहुका तीसरा भाग सूर्यका अन्तर होता है । शुक्रका आधा चन्द्रमाका अन्तर होता है और सूर्यमें दशानाथके दिन जोड देनेसे भौमका अन्तर होता है और भौमके समानही केतु का होता है.

उदाहरण—सूर्यकी दशामें सूर्यकाही अन्तर लगाना है। ६ वर्षका छठा हिस्सा लिया तो १ वर्ष मिला यह शुक्रकी अन्तरदशा हुई । अब इसमेंसे दशेश्वर सूर्यके १८ दिन घटाये (क्योंकि सूर्य अपने अन्तरमें ३ मास १८ दिनका है) तो ११ महीने, १२ दिन रहे। यह शनि भया इसमें फिर १८ घटाये तो १० मास २४ दिन

यह राहु भया। फिर १८ घटाये तो १० मास ६ दिन रहे यह बुध हुआ। फिर १८ घटाये तो ९ मास १८ दिन रहे यह बृहस्पति हुआ। अब राहु है १० मास २४ दिन इसका तीसरा भाग ३ मास १८ दिन सूर्य हुआ। शुक्र है १ वर्षका इसका आधा ६ मास का चन्द्रमा हुआ। अब सूर्य ३ मास १८ दिनका इसमें सूर्य के १८ दिन जोडे तो ४ मास ६ दिनका मंगल हुआ। और यही केतु भया। अथवा जिसका अन्तर निकालना हो उसकी दशा को वर्ष संख्या से गुणा कर दो। प्रथम अंक मास होगा और दूसरा अंक बचा उसे तिगुना कर दो दिन होंगे। जैसे सूर्य की दशा ६ वर्ष की है इसको ६ वर्षों से गुणा किया ३६ भये. प्रथम अंक ३ मास भये और शेष दूसरा अंक ६ है इसे तिगुना किया १८ भये ये दिन आये अर्थात् ३ मास १८ दिनका सूर्य हुआ।

विंशोत्तरीदशाका जोड।

विंशोत्तरीदशा में जब साधारण अन्तर लगाने होते हैं। उसके जोड में तो कुछ कठिनता नहीं। परन्तु जब जिस ग्रहकी दशा हो और उसीके भोग्य का काटकर जब अन्तर लगाना होता है तब विद्यार्थियों को हलचल पडती है इसलिये एक उदाहरण लिख देते हैं।

शुक्रकी दशा का जन्म है. पूर्वजन्मनि भुक्त १६ ।०। २१ । ४५ । १७ है तो इहजन्मनि भोग्य ३ । ११ ।८।१४।४३ हुआ सूर्य है ४ । ५ । ९ । २७ ॥

अब शुक्रान्तर लगाना है तो शुक्रके अन्तर में बुधतक १८ वर्ष, १० मास हुए. इनमें से पूर्वजन्मनिभुक्त १६ । ० । २१ । ४५ । १७ घटाये तो २ । ९ । ८ । १४ । ४३ यह बुधका शेष बचा और इसमें केतु का एक वर्ष दो मास जोडने से ३ । ११ । ८ । १४ । ४३ होगा और यही इह जन्मनि भोग्य था अब चक्र में बुधका शेष २ । ९ । ८ । १४ । ४३ । और केतुका १ । २ । ० । ० । ० । धरकर जोड दो यथा यंत्र में ।

दशाचक्रम्.

शु.	सू.	चं.
३	६	१०
११	०	०
८	०	०
१४	०	०
४३	०	०
१९	१९	१९
२४	५८	६४
४	३	३
५	१३	१३
९	२४	२४
२७	१०	१०

शुक्रान्तरम्.

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	बु.	के.	यो
३	१	१	१	०	२	३	२	२	१	३
४	०	८	२	०	८	२	१०	९	२	११
०	०	०	०	०	०	०	०	८	०	८
०	०	०	०	०	०	०	०	१४	०	१४
०	०	०	०	०	०	०	०	४३	०	४३
०	०	०	०	०	०	०	०	१९	१६	१९
०	०	०	०	०	०	०	०	५४	५७	५८
०	०	०	०	०	०	०	०	४	१	३
०	०	०	०	०	०	०	०	५	१३	१३
०	०	०	०	०	०	०	०	९	२४	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	२७	१०	१०

बहुत से ज्योतिषी इहजन्मनि भोग्य में नवग्रहों की अंतर्दशा लगा देते हैं परन्तु मेरी सम्मति में यह नहीं बैठता कारण जब दशा पूर्वजन्म में भुक्त हुई तो अन्तरदशा भी अवश्य बीतेगी ।

बुधैर्भावादयः सर्वे ज्ञेयाः सामान्यशास्त्रतः॥
एतच्छास्त्रानुसारेण संज्ञां ब्रूमो विशेषतः॥४॥

अन्वयः--बुधैः सर्वे भावादयः सामान्यशास्त्रतः ज्ञेयाः । एतच्छास्त्रानुसारेण संज्ञां विशेषतः ब्रूमः॥४॥

अर्थ-पण्डितों को सम्पूर्ण भावादिक अर्थात् मेषादि राशि और उनके स्वभावादि लघुजातक बृहज्जातक आदि से जानने चाहिये । इस शास्त्र के अनुसार तो केवल संज्ञा कहते हैं ॥४॥

दृष्टिविचार ।

पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनिजीवकुजादयः।
विशेषतश्च त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान्॥५॥

अन्वयः--सर्वे सप्तमं पश्यन्ति । शनिजीवकुजाः पुनः त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान् विशेषतः पश्यन्ति॥५॥

अर्थ--संपूर्ण ग्रह जिस स्थान में बैठे हों उससे सप्तमस्थान को देखते हैं । इनमें शनि, बृहस्पति और मंगल ये क्रम से तीसरे, दशवें, नववें, पांचवें और चतुर्थ, अष्टम इन स्थानों को विशेषकरके देखते हैं अर्थात् शनि तीसरे दशवें, गुरु नवम, पंचम और मंगल चतुर्थ, अष्टम ॥ इति दृष्टिनिर्णयः ॥५॥

सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः ।
पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः॥६॥

अन्वयः--त्रिकोणनेतारः सर्वे ग्रहाः शुभफलप्रदाः भवन्ति । यदि तु सप्त एव ग्रहाः त्रिषडायानां पतयः तर्हि पापफलप्रदाः भवन्ति ॥६॥

अर्थ—संपूर्ण ग्रह त्रिकोण अर्थात् नवम पञ्चमके स्वामी होनेसे शुभ फल देते हैं और जो तीसरे, छठे और एकादशके स्वामी हों तो अशुभ फल देते हैं ॥ ६ ॥

न दिशन्ति शुभं नृणां सौम्याः केंद्राधिपा यदि
क्रूराश्चेदशुभं ह्येते प्रबलाश्चोत्तरोत्तराः ॥७॥

अन्वयः—सौम्याः यदि केंद्राधिपाः तर्हि नृणां शुभं न दिशन्ति । चेत् क्रूराः केंद्राधिपाः तर्हि अशुभं न दिशन्ति ॥ हि एते उत्तरोत्तराः प्रबलाः ॥७॥

अर्थ–जो केन्द्रके स्वामी शुभग्रह[1] हों तो मनुष्योंको शुभ फल नहीं देते हैं और पापग्रह[2] हों तो शुभ फल देते हैं और ये त्रिकोण, केन्द्र तथा तीसरे छठे और एकादशके स्वामी उत्तरोत्तर प्रबल हैं अर्थात् पंचमेशसे नवमेश, तृतीयेशसे षष्ठेश और षष्ठेशसे एकादशेश प्रबल है और लग्नेशसे चतुर्थेश, चतुर्थेशसे सप्तमेश और सप्तमेशसे दशमेश प्रबल है ॥ ७ ॥

---

१ मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधः कन्यामिथुनयोः कर्काधीशस्तु चन्द्रमाः ॥१॥
धनुर्मीनाधिपो जीवः शनिर्मकरकुंभयोः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यो राश्यधीशा इमे स्मृताः ॥२॥

राशि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वामी	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.

केन्द्र त्रिकोणके स्वामी कहने से यह स्पष्ट हुआ कि राहु केतु का ग्रहण नहीं किया गया कारण उनका फल राशिपरत्वे और अन्यग्रहोंके संवन्धानुसार होता है ।

२ पापग्रह सूर्य, मंगल, शनि, क्षीणचन्द्रमा और सूर्ययुक्त बुध संवन्ध से भी ग्रहोंका शुभाशुभ फल होता है सो कहते हैं:–

लग्नाद्व्ययद्वितीयेशौ परेषां साहचर्य्यतः ॥
स्थानान्तरानुगुण्येन भवतःफलदायकौ॥८॥

अन्वयः--लग्नात् व्ययद्वितीयेशौ परेषां साहचर्यतः स्थानान्तरानुगुण्येन फलदायकौ भवतः ॥८॥

अर्थ—लग्नसे दूसरे और बारहवें स्थानके स्वामी दूसरे कारक ग्रहोंके साथ बैठनेसे और अपने मित्र शत्रुके स्थानमें बैठनेसे शुभाशुभ फलदायक होते हैं।

---

१ जो ग्रह अपने दीप्तांशकम हो वह भी अच्छा फल करता है। ग्रहोंके प्रदीप्तादि गुण कहते हैं-"दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शांतो दीनोऽतिदुखितः। विकलश्च खलः कोपी नवधा खेचरो भवेत् ॥" अर्थात् ग्रह नव प्रकारके होते हैं यथा (१) दीप्त, (२) स्वस्थ, (३) प्रमुदित, (४) शांत, (५) दीन, (६) अतिदुःखित, (७) विकल, (८) खल और (९) कोपकारक ॥१॥ अब उनके दीप्तादि होनेका प्रकार कहते हैं-"उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वपतिमित्रभे। मुदितो मित्रभे शांतः समभे दीन उच्यते ॥२॥ शत्रुभे दुःखितोऽतीव विकलः पापसंयुतः। खलः खलगृहे ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः ॥३॥" उच्चका ग्रह दीप्त है। अपने स्वामी और मित्रकी राशिका हो तो स्वस्थ। मित्रकी राशिका प्रमुदित और शांत कहाता है। समकी राशिका होनेसे दीन होता है शत्रुकी राशिका अतिदुःखित होता है। पापग्रहके साथ होनेसे विकल होता है। खल ग्रहके संगसे खल और सूर्यके साथ पडनेसे कोपी होता है।

पाके प्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साहशौर्यं धनवाहने च।
स्त्रीपुत्रलाभं शुभबन्धुपूज्यं क्षितीश्वरान्म नमुपैति मिद्या त् ॥१॥

अथात् अपने दीप्तांशकम जो ग्रह हो उसकी दशाके परिपाकके

अपने जन्मलग्नसे अष्टमेशका शुभाशुभ फल कहते हैं:—

भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशो न शुभप्रदः ॥
सएवशुभसन्धातालग्नाधीशोऽपि चेत्स्वयम् ॥

अन्वयः—रन्ध्रेशः भाग्यव्ययाधिपत्येन शुभप्रदः न भवति । चेत् सः एव स्वयं लग्नाधीशः अपि तर्हि शुभसन्धाता भवति ॥ ९ ॥

अर्थ—भाग्य जो नवमस्थान उससे द्वादश स्थानका स्वामी अर्थात् लग्नसे अष्टम घरका स्वामी शुभ फल नहीं देता है परन्तु वही अष्टमेश लग्नेशभी हो तो अच्छा फल देता है। जैसे मेषलग्न में मंगल और तुलालग्न में शुक्र ॥ ९ ॥

समय राज्य, उत्साह शौर्य्य, धन, वाहन, स्त्री पुत्रका लाभ, बन्धुओंमें मान और राजासे प्रतिष्ठा मिले ऐसा जानना ॥१॥

स्वस्थस्य खेटस्य दशाविपाके स्वस्थ्यं नृपाल्लब्धधनादिसौख्यम् ।
विद्या यशःप्रीतिमहत्वमारादारार्थभूम्यादिजधर्ममेती ॥ २ ॥

स्वस्थग्रहकी दशाके परिपाक होनेके समय धीरजता, राज्य धनकी लाभसे सुख विद्या, यश, प्रीति और बड़े आदरपूर्वक स्त्री धन, भूमि, धर्मका लाभ होता है।

मुदान्वितस्यापि दशाविपाके वस्त्रादिभूगन्धसुतार्थधैर्यम् ।
पुराणधर्मश्रवणादिलाभं शस्त्रादियानाम्बरभूषणाप्तिम् ॥३॥

जो ग्रह प्रमुदित होता है उसकी दशाके परिपाकके समय वस्त्र भूमि, सुगन्ध, पुत्र, धन, धैर्य, पुराणका श्रवण, शस्त्र आदि, सवारी शाल, दुशाले और आभूषणोंकी प्राप्ति होती है ॥ ३ ॥

दशाविपाके सुखधैर्यमेति शान्तस्य भूपुत्रकलत्रयानम् ।
विद्याविनोदान्वितधर्मशास्त्रं वस्त्रार्थदेशाधिपपूजितां च ॥ ४ ॥

जब शांतग्रहकी दशाका परिपाक समय आवे उस समय सुख

केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुशुक्रयोः ॥
मारकत्वेऽपि च तयोर्मारकस्थानसंस्थितिः ॥

अन्वयः—गुरुशुक्रयोः तु केन्द्राधिपत्यदोषः बलवान। अपि च तयोः मारकस्थानसंस्थितिः मारकत्वे बलवती ॥ १० ॥

अर्थ--बृहस्पतिशुक्रको केन्द्रका स्वामी होना अत्यन्त दोषकारक है और जो वेही गुरु शुक्र मारकस्थान में बैठे हों तो मारक फल देनेमें बलवान होते हैं ॥ १० ॥

धीरज, पुत्र, भूमि, स्त्री, सवारी, विद्याका विनोद, धर्मशास्त्र, बडे धनवान. राजासे आदर सत्कार ये फल होते हैं ॥ ४ ॥

स्थानच्युतिर्बन्धुविरोधिता च दीप्तस्य खेटस्य दशाविपाके ।
जीवत्यसौ कुत्सितहीनवृत्त्या त्यक्तो जनै रोगनिपीडितः स्यात् ॥५॥

प्रदीप्तग्रहकी दशाके परिपाक समय स्थानका छूटना कुटुंबके लोगोंसे झगडा, कुत्सित और हीनवृत्तिसे जीविका कर जीना, अपने जनोंसे छूटना और रोगी होना यह फल होता है ॥ ५ ॥

दुःखार्दितस्यापि दशाविपाके नानाविधं दुःखमुपैति नित्यम् ।
विदेशगो बन्धुजनैर्विहीनश्चौराग्निभूपैर्भयमातनोति ॥ ६ ॥

अतिदुःखित ग्रहकी दशाका जिस समय परिपाक हो अनेक प्रकारका दुःख होता है, विदेशकी यात्रा, कुटुंबका वियोग और चौर, अग्नि और राजासे भय होता है ॥ ६ ॥

वैकल्यखेटस्य दशाविपाके वैकल्यमायाति मनोविकारम् ।
मित्रादिकानां मरणं विशेषात्स्त्रीपुत्रघाताम्बरचोरपीडाम् ॥७॥

विकल ग्रहकी दशाके परिपाकमें विकलता, मनका विकार मित्रोंका मरण और स्त्री, पुत्र, सवारी तथा वस्त्र इनका विशेष दुःख और चोरसे पीडा होती है ॥ ७ ॥

पूर्वश्लोकसे यह निश्चित हो गया कि बुध और चन्द्रमाको केन्द्रका दोष नहीं तथापि विशेष कहते हैं:—

बुधस्तदनु चंद्रोऽपि भवेत्तदनु तद्विधः ॥
न रन्ध्रेशत्वदोषस्तु सूर्य्याचन्द्रमसोर्भवेत् ।

अन्वयः—तदनु बुधः तद्विधः तदनु चन्द्रः अपि तद्विधः भवेत् । सूर्य्याचन्द्रमसोः तु रन्ध्रेशत्वदोषः न भवेत् ॥ ११ ॥

अर्थ—बृहस्पति शुक्रकी अपेक्षा बुधको कुछ कमदोष है और उसी प्रकार बुधसे चन्द्रमा थोडे दोषका भागी है. "भाग्यव्ययाधिपत्येन" जो अष्टमेशके विषयमें कह आये हैं उसका अपवाद कहते हैं कि सूर्य और चन्द्रमाको अष्टमेशका दोष नहीं है ॥ ११ ॥

सप्तमश्लोकमें पापग्रहोंको केन्द्रका स्वामी होना अच्छा कहा है परन्तु यहां मंगलके विषयमें अधिक कहते हैं:—

कुजस्य कर्म्मनेतृत्वे प्रयुक्ता शुभकारिता ॥
त्रिकोणस्यापि नेतृत्वे न कर्म्मेशत्वमात्रतः॥

दशाविपाके कलहं वियोगं खलस्य खेटस्य पितुर्वियोगम् ।
शत्रोर्जनानां धनभूमिनाशमुपैति नित्यं स्वजनैश्च निन्दाम ॥ ८ ॥

खलग्रहकी दशाके विपाकमें कलह हो, वियोग हो, पिताका मरण हो, शत्रु, स्वजन, धन, पृथ्वी इनका नाश हो और अपने कुटुंबके लोगोंसे निन्दा किया जाय ॥ ८ ॥

कोपान्वितास्यापि दशाविपाके पापाः समायांति बहुप्रकारैः।
विद्याधनस्त्रीसुतबंधुनाशं पुत्रादिकृच्छं त्वथ नेत्ररोगम्॥ ९॥

कोपग्रहकी दशाके विपाकमें बहुत प्रकारके पाप लगें, विद्या, धन, पुत्र, बन्धु इनका नाश हो, संतति कष्ट हो और नेत्रपीडा होय॥ ९॥

अन्वयः-कुजस्य त्रिकोणस्य अपि नेतृत्वे कर्म-नेतृत्वे प्रयुक्ता शुभकारिता भवति कर्म्मेशत्वमात्रतः शुभकारिता न भवति॥ १२॥

अर्थ–मंगल दशमस्थानका स्वामी हो तो शुभफल देता है परन्तु वह त्रिकोणकाभी स्वामी होगा तो शुभ फल देगा केवल दशमेशही होनेसे नहीं देगा यह योग केवल कर्कलग्नमें मिलेगा १२॥

यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेशसंयुतौ॥
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ॥

अन्वयः–तमोग्रहौ यद्यद्भावगतौ यद्यद्भावेशसंयुतौ तत्तत्फलानि प्रबलौ सन्तौ प्रदिशेताम्॥ १३॥

अर्थ–राहु, केतु जिस जिस ग्रहके भावमें बैठे होंय अथवा जिस जिस भावके स्वामीके साथ बैठे होंय उसीके अनुसार विशेष करके फल देते हैं॥ १३॥

अथ राजयोगाध्यायः।

अब राजयोग कहते हैं।

केन्द्रत्रिकोणपतयः सम्बन्धेन परस्परम्॥
इतरैरप्रसक्ताश्चेद्विशेषफलदायकाः॥१४॥

अन्वयः-केन्द्रत्रिकोणपतयः चेत् इतरैः अप्रस
तर्हि परस्पर सम्बन्धेन विशेषफलदायकाः भवन्ति

अर्थ-केन्द्र और त्रिकोणके स्वामी आपसमें संबन्ध करते
और तृतीय, षष्ठ, एकादश स्थानोंके स्वामियोंसे संबन्ध न क
हों तो विशेष फलके देनेवाले होते हैं ॥ १४ ॥

केन्द्रत्रिकोणनेतारौ दोषयुक्तावपि स्वयं
सम्बन्धमात्राद्बलिनौ भवेतां योगकारकौ

अन्वयः-केन्द्रत्रिकोणनेतारौ स्वयं दोषयु
अपि सम्बन्धमात्रात् बलिनौ सन्तौ योगकार
भवेताम् ॥ १५ ॥

अर्थ-केन्द्र और त्रिकोणके स्वामी दोषयुक्तभी हों तोभ
केवल संबन्धसे योगकारी होते हैं ॥ १५ ॥

---

१ संबन्ध चार प्रकारका है. १ अन्योन्यराशिस्थित अर्थात् क्षे
संबन्ध, २ परस्पर दृष्टिसंबन्ध, ३ अन्यतर दृष्टिसंबन्ध, ४ सहाव
स्थान लक्षण । १ अन्योन्य राशिस्थित संबन्ध उसे कहते हैं
जैसे मेषका वा वृश्चिकका सूर्य हो और भौम सिंहका होय तो सू
भौमका क्षेत्रसंबन्ध हुआ । २ परस्पर दृष्टिसंबन्ध वह है, जैसे मेष
मंगल हो और तुलाका सूर्य हो अर्थात् प्रत्येक ग्रहका सप्तम देखन
३ अन्यतर दृष्टिसंबंध वह है जैसे सिंहका मंगल हो और मीनरा
पर स्थित सूर्यको पूर्ण देखता हो और सूर्य भौमको न देखे अर्था
एक ग्रह देखता हो एक न देखता हो । ४ सहावस्थान लक्षण वह है कि
एक राशिमेंही दो ग्रह मिले बैठे हों जैसे सूर्य भौम दोनों वृषराशि
हों ये चारों संबन्ध पूर्व पूर्व बली हैं.

(२) ३ । ६ । ११ । ८ इन स्थानोंके स्वामियोंकरके युक्त हों अथव
संबन्ध रखते हों.

अब प्रबल राजयोग कहते हैं:—

निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्म्मकर्मणोः॥
एकत्रान्यतरो वापि वसेच्चेद्योगकारकौ १६

अन्वयः—तौ उभौ व्यत्ययेन धर्म्मकर्म्मणोः निवसेतां (तदा योगो भवति)। वा एकत्र निवसेतां (तदपि योगो भवति) (अपि वा एक एव निजस्थाने निवसेत् तदा योगकारकौ भवतः ॥ १६ ॥

अर्थ—नवम और दशमके स्वामी इस प्रकार बैठे हों कि नवमेश दशवें और दशमेश नवमें तो एक राजयोग हुआ। अथवा दोनों नवमस्थानमेंही बैठे हों तो यहभी दूसरा राजयोग हुआ। अथवा दोनों दशमस्थानमें बैठे हों, यह तीसरा राजयोग हुआ। अथवा दोनोंमेंसे एकही अपने स्थानमें बैठा हो तो योगकारक होता है ॥ १६ ॥

अत्र दूसरा राजयोग कहते हैं:—

त्रिकोणाधिपयोर्मध्येसम्बन्धोयेनकेनचित्
केन्द्रनाथस्यबालिनोभवेद्यादिसुयोगकृत् १७

अन्वयः—चेत् त्रिकोणाधिपयोः मध्ये येन केनचित बलिनः केन्द्रनाथस्य सम्बन्धः भवेत् तर्हि सुयोगकृत् भवति ॥ १७ ॥

अर्थ—त्रिकोणके स्वामियोंमेंसे किसी एकके साथ बली केन्द्रनाथका अर्थात् दशमस्थानके स्वामीका संबन्ध हो तो राजयोग करता है ॥ १७ ॥

दशास्वपि भवेद्योगः प्रायशो योगकारिणोः॥
दशावयीमध्यगतस्तदयुक्शुभकारिणाम् ॥

अन्वयः—प्रायशः योगकारिणोः दशाद्वयीमध्य गतः तद्युक्शुभकारिणां दशासु अपि योगः भवेत् ॥१८॥

अर्थ—राजयोग करनेवाले केन्द्रत्रिकोणेशोंकी अर्थात् नव दशमेशोंकी मूलदशामें योगकारक ग्रहोंसे संबन्ध नहीं रखनेवाले ग्रहोंके अंतरमें शुभ फल होता है ॥१८॥

अब पाप ग्रहों से भी योग कहते हैं:—

योगकारकसम्बन्धात्पापिनोऽपि ग्रहाःस्वतः
तत्तद्भुक्त्यनुसारेण दिशेयुर्योगजं फलम् ॥१९॥

अन्वयः—स्वतः पापिनः अपि ग्रहाः योगकारक सम्बन्धात् तत्तद्भुक्त्यनुसारेण योगजं फलं दिशेयुः ॥१९॥

अर्थ—जो पापी ग्रह है अर्थात् तीसरे, छठे, एकादश स्थानके स्वामी हैं वे योगकारक ग्रहके साथ संबन्ध करने से योगकारक ग्रहकी दशाके अन्तरमें शुभ फल देते हैं ॥१९॥

केन्द्रत्रिकोणाधिपयोरैक्त्वे योगकारकौ ।
अन्यत्रिकोणपतिना सम्बन्धो यदि किं पर

अन्वयः—केन्द्रत्रिकोणाधिपयोः एकत्वे तौ उभौ योगकारकौ भवतःयदि तु अन्यत्रिकोणपतिना सम्बन्धः तदा ततः परं किं स्यात् ॥२०॥

अर्थ—केन्द्रत्रिकोणके स्वामियोंके आपसमें संबन्ध करनेसे राजयोग होता ही है और जो इसमें दूसरे त्रिकोणेशके साथ संबन्ध हो तो फिर क्या कहना है अर्थात् परमोत्तम राजयोग होता है ॥२०॥

अब राहु केतुके राजयोग करनेका प्रकार कहते हैं:-

यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ ॥
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ॥२१

अन्वयः-यदि तमोग्रहौ केन्द्रे वा त्रिकोणे निवसेतां तदा अन्यतरेण अपि नाथेन सम्बन्धात् योगकारकौ भवतः ॥२१॥

अर्थ-राहु, केतु यदि केन्द्रमें बैठे होंय और त्रिकोणेशसे संवन्ध करते हों और त्रिकोणमें बैठकर केन्द्रेशसे संवन्ध करते हों तो राजयोग करते हैं ॥ २१ ॥

अब राजगोगभंग कहते हैं:-

धर्म्मकर्माधिनेतारौ रन्ध्रलाभाधिपौ यदि ॥
तयोः संबन्धमात्रेण न योगं लभते नरः॥२२॥

अन्वयः-यदि धर्म्मकर्म्माधिनेतारौ रन्ध्रलाभाधिपौ स्यातां तदा तयोः संबन्धमात्रेण च नरः योगं न लभते ॥ २२ ॥

अर्थ-धर्म और कर्मके स्वामी अष्टम और एकादशके स्वामी हों अर्थात् जो नवमेश है वही अष्टमेश हो और जो दशमेश है वही एकादशेश हो तो राजयोग नष्ट हो जाता है जैसे मेष और मिथुनलग्नोंमें शनि और इसी प्रकार नवमेश अष्टमेशसे संवन्ध करता हो और दशमेश लाभेशसे संवन्ध करता हो तौ राजयोग भंग करता है ॥ २२ ॥

पण्डित रामेश्वरभट्ट का वनाया हुआ उडुदायप्रदीप के राजयोगाध्यायका भाषाऽनुवाद समाप्त हुआ ॥ २ ॥

अथायुर्दायाध्यायः ।

अब आयुर्दायाध्याय लिखते हैं:—

अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं च यत्
तयोरपि व्ययस्थानंमारकस्थानमुच्यते॥२३॥

अन्वयः—अष्टमं यत् च अष्टमात् अष्टमं तत् आयुषः स्थानम् उच्यते । अपि च तयोः व्ययस्थानं मारकस्थानम् उच्यते ॥ २३ ॥

अर्थ—लग्नसे आठवां स्थान आयु है और आठवेंसे आठवां स्थान अर्थात् लग्नसे तीसरा भी आयुस्थान है और इन दोनों अष्टम और तीसरे स्थानोंसे द्वादशवें स्थान अर्थात् लग्नसे सप्तम और दूसरा ये मारकस्थान कहे हैं ॥ २३ ॥

तत्राप्याद्यव्ययस्थानाद्वितीयं बलवत्तरम् ।
तदीशितुस्तत्र गताः पापिनस्तेन संयुताः २४
तेषां दशाविपाकेषु संभवे निधनं नृणाम् ।
तेषामसम्भवे साक्षाद्व्ययाधीशदशास्वपि २५

अन्वयः—तत्र अपि आद्यव्ययस्थानात् द्वितीयं बलवत्तरं भवति । तदीशितुः तथा तेन संयुताः तत्र गताः ये पापिनः तेषां च दशाविपाकेषु नृणां निधनं वाच्यं तेषां असम्भवे व्ययाधीशदशासु अपि नृणां मरणं वाच्यम् ॥ २४ ॥ २५ ॥

अर्थ--अवसप्तमस्थान की अपेक्षा दूसरा घर वली है इसका विचार लिखते हैं सप्तम और दूसरा इन दोनों में सप्तमस्थान से दूसरा स्थान अधिक वली है इसलिये द्वितीयेशकी दशा में जो सभवै हो तौ मनुष्यों का मरण कहना चाहिये. अथवा दूसरे स्थान में बैठे हुए पापीग्रहँ द्वितीयेश करके युक्त हों तो उनकी दशा में मरण कहना चाहिये. अथवा द्वितीयेश से संवन्ध करनेवाले पापी ग्रहोंकी अन्तरदशा में प्राणियों का मरण कहना और जो इसमें संभवै न हो तो लग्नसे द्वादशस्थान के स्वामी की दशामें अथवा व्यया-धीशसे संवन्ध करनेवाले जो पापी ग्रह हैं उनकी दशामें मरण होना चाहिये ॥ २४ ॥ २५ ॥

---

१ प्रथम आयु देखना चाहिये, पूर्णायु, मध्यायु वा अल्पायु है। पूर्णायु जब निश्चित होगी और मारकेशकी दशा आवेगी तो मृत्यु-तुल्य अरिष्ट देकर निकस जायगी और जब जो आयु निश्चित है उस समय मारकदशा लगने पर मृत्यु करेगी ऐसा विचार करना।

२ तीसरे, छठे, एकादशके स्वामी।

३ संभवलक्षणम्—आयु तीन प्रकारकी जो कही है उसका प्रमाण कहते हैं। यथा-"त्रिविधश्चायुषां योगः स्वल्पायुर्मध्यमुत्तमम्। द्वात्रिंशत्पूर्वमल्पं तु तदूर्ध्वं मध्यमं भवेत् ॥ १ ॥ आसप्ततिस्तदूर्ध्वं तु दीर्घायुरिति संमतम्। उत्तमायुः शतादूर्ध्वं मुनीशाः संति तद्विदः ॥ २ ॥" अर्थात् आयु तीन प्रकारकी स्वल्पायु, मध्यायु और पूर्णायु । बत्तीस वर्षसे पहिले अल्पायु, उसके पीछे मध्यायु ७० वर्षतक, फिर दीर्घायु, फिर १०० वर्षके अनन्तर हो तो उत्तमायु कही जाती है, अब जैसे माना कि अल्पायु है और उसके मध्यमें मारकेशकी दशा आई अथवा मारकस्थानमें स्थित पापग्रह कहिये ३ । ६ । ११ वे स्थानके स्वामीकी दशा आई अथवा मारकेशसे संबन्धकर्ताकी दशा आई तो उसमें मरण अवश्य कहना। इसी प्रकार मध्यायु और पूर्णायुमें विचार करना चाहिये। जो जैमिनीसू-

अलाभे पुनरेतेषां सम्बन्धेन तदीशितुः ॥
क्वचिच्छुभानां च दशास्वष्टमेशदशासु च॥

अन्वयः–पुनः एतेषां अलाभे तदीशितुः सम्बन्धेन शुभानां च दशासु मरणं वाच्यम् । क्वचित् तेषां अपि अलाभे अष्टमेशदशासु मरणं वाच्यम् ॥२६॥

अर्थ—जो व्ययाधीशकी अथवा द्वादशेशसे संवन्ध करने वाले पापी ग्रहोंकी दशाका भी अलाभ हो तो द्वादशेशसे संवन्ध करने वाले शुभग्रहोंकी दशामें मरण कहना चाहिये और जो व्ययेश संम्वधी शुभग्रहकी दशा भी न हो तो कभी २ अष्टमेशकी दशामें मरण कहना चाहिये ॥ २६ ॥

त्रमें कहा है सो कहते हैं-"प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घमिति" अयमर्थः-चरराश्योर्यदि लग्नेशाष्टमेशौ भवतस्तदा दीर्घमायुः स्थिरद्विस्वभावयोर्वा लग्नेशाष्टमेशौ यदि तदापि दीर्घमायुः । अर्थात् चरराशियोंके लग्नेश और अष्टमेश होंय तौ दीर्घ आयु हो अथवा स्थिर और द्विस्वभाव राशिके लग्नेश अष्टमेश हों तौभी दीर्घायु कहना । अथ मध्यायुराह-प्रथम द्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यमिति चरस्थिरयोर्यदि लग्नेशाष्टमेशौ तदा मध्यमायुः । द्विस्वभावयोर्वा लग्नेशाष्टमेशौ यदि तदापि मध्यमायुरित्यर्थः ॥ यदिलग्नेश अष्टमेश चर और स्थिर राशिमें होंय तो मध्यमायु कहना अथवा लग्नेश, अष्टमेश, द्विस्वभाव राशिके हों तौभी मध्यमायु कहना । अथाल्पायुराह–मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनमिति । स्थिरयोर्यदि लग्नेशाष्टमेशौ तदाऽप्यल्पमायुरिति । अर्थात् यदि लग्नेश अष्टमेश स्थिरराशिकेही हों तो अल्पायु कहना, अब माना कि किसीकी अल्पायु निश्चय करी और उस समय मारकेशकी दशाही नहीं तौ कैसे मारक बताना यह संशय भया और यह जो कहा कि "तेषामसंभवे"सो यहां घटा कि पूर्वोक्त जो

केवलानां च पापानां दशासु निधनं क्वचित्॥
कल्पनीयं बुधैर्नृणां मारकाणामदर्शने॥२७॥

अन्वयः—क्वचित् सर्वेषां मारकाणाम् अदर्शने बुधैः केवलानां पापानां दशासु नृणां निधनं कल्पनीयम् ॥ २७ ॥

अर्थ—जो मारकका असंभव हो तो मारकेशके संवन्धसे रहितभी तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थानके स्वामियोंकी दशामेंही ज्योतिषियोंको मरण कल्पना करनी चाहिये ॥ २७ ॥

मारकेश निश्चय किये उनका असंभव भया तौ ऐसी जगह जन्मलग्न से द्वादशस्थानकी दशामें वा अन्तर दशामें मरण कहना । अपि-शब्दसे यह भी भावार्थ निकलता है कि व्ययाधीशके संवन्धी जो पापीग्रह हैं उनकी दशामेंभी मरण कहना चाहिये । ग्रन्थान्तरे आयुनिर्णयः—

आयुःस्थानाधिपः पापैः सहैव यदि संस्थितः ।
करोत्यल्पायुषं जातं लग्नेशोऽप्यत्र संस्थितः ॥ १ ॥

जो अष्टमेश पापग्रहोंके साथही बैठा हो और वहांही लग्नेशभी बैठा हो तो मनुष्यको अल्पायु करता है ॥ १ ॥

षष्ठे व्ययेऽपि षष्ठेशो व्ययाधीशो रिपौ व्यये ।
लग्नेऽष्टमे स्थितौ वापि दीर्घमायुः प्रयच्छति ॥ २ ॥

षष्ठेश छठे हो वा द्वादश हो और द्वादशेश द्वादश हो वा छठे हो अथवा षष्ठेश और द्वादशेश लग्नमें वा अष्टम स्थित हों तो दीर्घ आयु करते हैं ॥ २ ॥

एवं हि शनिना चिन्ता कार्या तर्कैर्विचक्षणैः ।
कर्माधिपेन च तथा चिन्तनं कार्यमायुषः ॥ ३ ॥

इसी प्रकार पण्डितोंको आयु के देखनेमें शनि और दशमेशसे विचार करना चाहिये अर्थात् अष्टमेश पापग्रहोंके साथ हो उसके साथ सनि हो वा दशमेश हो ॥ ३ ॥

शनिके मारकत्वमें विशेषता:—

मारकैःसह सम्बन्धान्निहन्ता पापकृच्छनिः ।
अतिक्रम्येतरान् सर्वान् भवत्येव न संशयः॥२८॥

अन्वयः—पापकृत् शनिः मारकैः सह सम्बन्धात् इतरान् सर्वान् अतिक्रम्य निहन्ता भवति एव अत्र संशयः न ॥ २८ ॥

अर्थ—पापकारक शनि जब मारकेशोंसे संबन्ध करता हो तब सम्पूर्ण मारकेशोंको अतिक्रमण करके निस्संदेह मारक होता है ॥ २८ ॥

ग्रहोंके शुभाऽशुभ फल देनेका समय:—

न दिशेयुर्ग्रहाः सर्वे स्वदशासु स्वभुक्तिषु ।
शुभाशुभफलं नृणामात्मभावानुरूपतः ॥२९॥

अन्वयः—सर्वे ग्रहाः स्वदशासु स्वभुक्तिषु च आत्मभावानुसारतः नृणां शुभाशुभफलं न दिशेयुः २९

स्वस्थाने स्वांशके वापि मित्रांशे मित्रमन्दिरे ।
दीर्घायुषं करोत्येव लग्नेशोऽष्टमपः पुनः ॥ ४ ॥

लग्नेश वा अष्टमेश अपनी राशिका हो अपने नवांशकका होय वा मित्रके नवांशकका हो वा मित्रकी राशिका हो तो दीर्घायु करता है४

लग्नाष्टमपकर्मेशमंदाः केन्द्रत्रिकोणयोः ।
लाभे वा संस्थितास्तद्वद्दिशेयुर्दीर्घमायुषम् ॥ ५ ॥

लग्नेश, अष्टमेश, दशमेश और शनि ये केन्द्र त्रिकोण अथवा लाभ में बैठे हों तो दीर्घायु करते हैं ॥५॥ इस प्रकार अनेक योग हैं सो ग्रन्थान्तरों से जानना ।

१ तीसरे, छठे, एकादश स्थानके स्वामीके साथ हो वा संबन्ध करता हो ।

अर्थ—सूर्यादि सम्पुर्ण ग्रह अपनी मूलदशा और अपनेही अन्तरमें मनुष्योंको अपने सिंहादि भावोंके अनुरूप फल नहीं देते हैं ॥ २९ ॥

आत्मसम्बन्धिनो ये च ये वा निजसधर्मिणः
तेषामन्तर्दशास्वेवदिशन्तिस्वदशाफलम्॥३०

अन्वयः--ये आत्मसम्बन्धिनः वा ये निजसधर्मिणः च तेषां अन्तर्दशासु एव स्वदशाफलं दिशन्ति

अर्थ—जो ग्रह चार प्रकारके सम्बन्धके अनुसार अपने संबंधी हैं अथवा जो अपने सहधर्मी हैं अर्थात् आपसमें सम्बन्ध न रखने परभी शुभ अशुभ स्थानके स्वामी होनेसे समान हैं उनकी अन्तरदशामेंही अपनी दशाका फल करते हैं ॥ ३० ॥

जो अपने संबन्धी और समानधर्मवाले ग्रहोंका अभाव हो तो दशाके फलका प्रकार लिखते हैं:—

इतरेषां दशानाथविरुद्धफलदायिनाम् ॥
तत्तत्फलानुगुण्येन फलान्यूह्यानिसूरिभिः

अन्वयः--सूरिभिः दशानाथविरुद्धफलदायिनाम् इतरेषां फलानि तत्तत्फलानुगुण्येन ऊह्यानि ॥३१॥

अर्थ--ज्योतिषियोंको चाहिये कि दशानाथके विरुद्ध फल देनेवाले जो दूसरे ग्रह हैं उन्होंका फल अन्तरदशाओंके स्वामियोंके फलोंके अनुसार जाने ॥ ३१ ॥

स्वदशायां त्रिकोणेशभुक्तौ केन्द्रपतिः शुभम्
दिशेत्सोऽपि तथा नाचेदसम्बन्धेन पापकृत्

अन्वयः--केन्द्रपतिः स्वदशायां त्रिकाणभुक्तौ च शुभं दिशेत् नो चेत् असम्बन्धेन पापकृत् भवति। तथा सः अपि ॥ ३२ ॥

अर्थ—केन्द्रका स्वामी अपनी दशामें और त्रिकोणेशकी अन्तरदशामें शुभ फल देता है (परन्तु आपसमें संबन्ध होना मुख्य है) और जो संबन्ध न हो तो बुरा फल देता है और इसी प्रकार त्रिकोणेशको जानो अर्थात् त्रिकोणेशके स्वामीकी दशामें केन्द्रके स्वामीकी अन्तरदशामें आपसमें संबन्ध होनेसे शुभ फल होगा अन्यथा अशुभ होगा ॥ ३२ ॥

मारकेशके अन्तरमें राजयोगका आरंभ होवे उसका फल कहते हैं-

आरम्भो राजयोगस्य भवेन्मारकभुक्तिषु ।
प्रथयन्ति तमारभ्य क्रमशःपापभुक्तयः॥३३॥

अन्वयः-यदि मारकभुक्तिषु राजयोगस्य आरम्भः भवेत् तदा पापभुक्तयः तं आरभ्य क्रमशः प्रथयन्ति ३

अर्थ-मारकेशके अन्तरमें राजयोगका आरंभ हो तो पापग्रहोंकी अन्तरदशा उस मनुष्यको राज्याधिकारसे केवल प्रसिद्ध कर देती है, पूर्ण सुख नहीं कराती है ॥ ३३ ॥

तत्सम्बन्धिशुभानां तु तथा पुनरसंयुजाम् ।
शुभानां तु समत्वेन संयोगो योगकारिणाम्

अन्वयः--तत्सम्बन्धिशुभानां भुक्तिषु तथा। पुनः असंयुजां योगकारिणां शुभानां तु भुक्तिषु यदि संयोगः तदा समत्वेन तथा ॥ ३४ ॥

अर्थ--जो राजयोग करनेवाले ग्रहोंके संवन्धी शुभग्रहोंकी अन्तरदशामें राजयोगका आरंभ होवे तो राज्यसे सुख और प्रतिष्ठा बढती है और जो राजयोग करनेवाले ग्रहोंसे संवन्ध न करनेवाले शुभग्रहोंकी अन्तरदशामें राजयोगका आरंभ होवे तो समान फल कहना कमती बढती न होगा, जैसा है वना रहेगा ॥३४॥

राजयोगकारककीही दशामें विशेष फल कहते हैं:--

शुभस्यास्य प्रसक्तस्य दशायां योगकारकाः
स्वभुक्तिषु प्रयच्छन्ति कुत्रचिद्योगजं फलम्

अन्वयः--प्रसक्तस्य अस्य शुभस्य दशायां योगकारकाः स्वभुक्तिषु योगजं फलं कुत्रचित् प्रयच्छन्ति

अर्थ--इस योगकारक शुभग्रहसे संवन्ध करनेवालेकी दशामें योगकारक ग्रह अपने अंतरदशामें भी कभी २ राजयोगका फल देते हैं अर्थात् राजयोगकारक ग्रहकी दशामें जव योगकारक ग्रहका अंतर लगेगा तव फल होगा ॥ ३५ ॥

अव राहुकेतुके विषयमें विशेष कहते हैं:-

तमोग्रहौ शुभारूढावसम्बन्धेन केनचित् ।
अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योगकारकौ ॥३६॥

अन्वयः--केनचित् असम्बन्धेन शुभारूढौ तमोग्रहौ अन्तर्दशानुसारेण योगकारकौ भवेताम् ॥३६॥

अर्थ--राहु केतु ये दोनों किसी योगकारक ग्रहके संवन्धी न होनेपरभी केवल शुभ स्थानों में अर्थात् केन्द्र और त्रिकोणस्थानमेंसे किसी स्थानमें बैठनेसे अन्तरदशाके अनुसार योगकारक होते हैं। सार यह निकला कि राहु केतु विनाही किसीके संवन्धके केन्द्र

त्रिकोणमें उत्तम हैं परन्तु जब राजयोगकारकका अंतर आवेगा तब उत्तम फल होगा तिसमेंभी जब शुभका होगा तब परमोत्तम फल करेगा अशुभका होगा हीन फल करेगा ॥ ३६ ॥

अब पापग्रहोंकी दशाओंमें अंतरदशाका विशेष फल कहते हैं:-

पापा यदि दशानाथाः शुभानां तदसंयुजाम्।
भुक्तयः पापफलदास्तत्संयुक्शुभभुक्तयः॥३७॥
भवन्ति मिश्रफलदा भुक्तयो योगकारिणाम्।
अत्यन्तपापफलदा भवन्ति तदसंयुजाम्॥३८॥

अन्वयः-दशानाथाः यदि पापाः स्युः तदा तदसंयुजां शुभानां भुक्तयः पापफलदाः भवन्ति । तत्संयुक्शुभभुक्तयः मिश्रफलदाः भवन्ति । तदसंयुजां योगयुकारिणां भुक्तयःअत्यन्तपापफलदाः भवन्ति ।३७।३८।

अर्थ-जो दशाके स्वामी अशुभ ग्रह हों तो दशाके स्वामीके सम्बन्ध रहित शुभग्रहोंकी अन्तरदशा अशुभ फलकी देनेवाली होती है और पापी दशानाथ हो और उसके संबन्धी शुभ ग्रह हों तो उनकी अन्तरदशा मिश्रफल कहिये भला बुरा फल देती है और पापी दशानाथसे संबन्ध रखनेवाले योगकारक ग्रहोंकी अन्तरदशा बहुत बुरे फलकी देनेवाली होती है भाव यह है कि पापीग्रहकी दशा सब प्रकार निषिद्धही है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

अन्तरदशाके योगसे जो मारक हैं उसके मारकत्वको कहते हैं:-

सत्यपि स्वेन सम्बन्धे न हन्ति शुभभुक्तिषु।
हन्ति सत्यप्यसम्बन्धे मारकः पापभुक्तिषु ३९

अन्वयः—स्वेन सम्बन्धे सत्यपि मारकः शुभभुक्तिषु न हन्ति असम्बन्धे सति अपि पापभुक्तिषु हन्ति॥

अर्थ--अपना संवन्ध होवे तौभी मारकग्रह शुभ ग्रहोंकी अंतरदशाओंमें नहीं मारता है और जो अपना संवन्ध नभी हो और पापग्रहोंका अंतर हो तो मारक मृत्युको देता है॥ ३९॥

परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ॥
व्यत्ययेन विशेषेण प्रदिशेतां शुभाशुभम् ४०

अन्वयः—सूर्यजभार्गवौ परस्परदशायां स्वभुक्तौ व्यत्ययेन विशेषेण शुभाशुभं प्रदिशेताम्॥ ४०॥

अर्थ—शनि और शुक्र परस्पर दशाओं में और अन्तरदशामें विशेषकरके विपरीत ही शुभ अशुभ फल देते हैं अर्थात् शनिकी मूलदशा में जब शुक्रकी अंतरदशा आवेगी तब शनिका ही विशेष शुभ अशुभ फल देगा इसी प्रकार जब शुक्रकी दशा होगी तो शनी अपनी अन्तरदशामें शुक्रका फल विशेष करके देगा॥४०॥

अब प्रसिद्धकारक राजयोग कहते हैं:—

कर्मलग्नाधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ॥
राजयोगाविति प्रोक्तंविख्यातो विजयी भवेत् ४१

अन्वयः—कर्मलग्नाधिनेतारौ अन्योन्याश्रयसंस्थितौ राजयोगौ भवतः इति प्रोक्तम्। (अस्मिन्

योगे जातः पुरुषः इत्यध्याहारः) विख्यातःविजयी च भवेत् ॥ ४ ॥

अर्थ-जो दशम घरका स्वामी और लग्नका स्वामी अन्योन्यस्थान में बैठे हों अर्थात् दशमेश लग्नमें और लग्नेश दशवें हों तो ये दोनों राजयोग करनेवाले होते हैं । इस योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य वडा प्रसिद्ध और युद्ध में विजय पानेवाला होता है ॥ ४१ ॥

धर्मकर्माधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ
राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवे

अन्वयः-धर्मकर्माधिनेतारौ अन्योन्याश्रयसंस्थितौ राजयोगौ भवतः इति प्रोक्तम् (तस्मिन् योगे जातः) विख्यातः विजयी च भवेत् ॥ ४२ ॥

अर्थ-धर्म और कर्मके स्वामी अन्योन्याश्रित हों अर्थात नवमका स्वामी दशवें और दशमका स्वामी नवम हो तो राजयोग करते हैं जो मनुष्य इसमें उत्पन्न होता है वह वडा विख्यात और युद्धमें विजयशील होता है ॥ ४२ ॥

इति श्रीमदागरानगरवास्तव्यगुर्जरविप्रकुलोद्भवज्योतिर्विद्वालमुकुन्दभट्टसूरिसूनुरामेश्वरभट्टविरचितायामुडुदायप्रदीपतत्वबोधिनीभाषाटीकायामन्तर्दशाध्यायः ॥ ३ ॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

वेदेष्वङ्कधरावर्षे भाद्रमास्यसिते दले ॥
दशम्यां भास्करदिने टीकैषा पूर्णतामगात्

सूर्यान्तरम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	१	६ व.
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	मा.
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	दि.

चन्द्रान्तरम्.

चं.	मं	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु	सू	यो.
०	०	१	१	१	१	०	०	०	१० व.
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	९	दि.

भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु	सू.	चं.	यो.
०	१	०	१	०	०	१	०	०	७ व.
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मा.
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	दि.

राह्वन्तरम्.

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
२	२	२	२	१	३	०	१	१	१८ व
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	मा.
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	दि.

जीवान्तरम्.

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
२	२	२	०	२	०	१	०	२	१६ व.
१	६	३	११	८	९	४	११	४	मा.
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	दि.

शन्यन्तरम्.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	यो.
३	२	१	३	०	१	१	२	२	१९ व.
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	मा.
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	दि.

बुधान्तरम्.

बु	के.	शु.	सू.	चं	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
२	०	२	०	१	०	२	२	२	१७ व
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	मा.
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	दि.

केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
०	१	०	०	०	१	०	१	०	७ व.
४	२	४	७	४	०	११	१	११	मा.
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	दि.

शुक्रान्तरम्.

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	यो.
३	१	१	१	३	२	३	२	१	२० व.
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	मा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.

सूर्ये सूर्यान्तरम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३ मा.
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	१८ दि.
२४	०	१८	१८	२४	६	१८	१८	०	घ.

सूर्ये चन्द्रान्तरम.

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	१	०	६ मा.
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९	दि.
०	३०	०	०	३०	३०	१०	०	०	घ.

सूर्ये भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मा.
७	१८	१६	१७	१७	७	२१	६	१०	६ दि.
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	घ.

सूर्ये राह्वन्तरम्.

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
१	१	१	१	०	१	०	०	०	१० मा.
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	२५ दि.
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	घ.

सूर्ये जीवान्तरम्.

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
१	१	१	०	१	०	०	०	१	९ मा.
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	१८ दि.
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	घ.

सूर्ये शन्यन्तरम्.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	यो.
१	१	०	१	०	०	०	१	१	११ मा.
१४	१८	१९	२७	१६	२८	१९	२१	१५	१२ दि.
९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	घ.

सूर्ये बुधान्तरम्.

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
१	०	१	०	३	०	१	१	१	१० मा.
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	६ दि.
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	घ.

सूर्ये केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
०	१	०	०	०	०	०	०	०	४ मा.
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	६ दि.
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	घ.

सूर्ये शुक्रान्तरम्.

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	यो.
२	०	१	०	१	१	१	१	०	१२ मा.
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	६ दि.
०	०	०	०	०	०	२	०	०	घ.

चन्द्रे चन्द्रान्तरम्.

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.
०	०	१	१	१	१	०	१	०	१० मा.
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	दि.
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.

चन्द्रे भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.
०	१	०	१	०	०	१	०	०	७ मा.
१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	१७	दि.
१५	३०	३०	१५	४५	१५	०	३०	३०	घ.

चन्द्रे राह्वन्तरम्.

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
२	२	२	२	१	३	०	१	१	१८ मा.
२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	दि.
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	घ.

चन्द्रे जीवान्तरम्.

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
२	२	२	०	२	०	१	०	२	१६ मा.
४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्रे शन्यन्तरम्.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	यो.
३	२	१	३	०	१	१	२	२	१९ मा.
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	दि.
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	घ.

चन्द्रे बुधान्तरम्.

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
२	०	२	०	१	०	२	२	२	१७ मा
१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०	दि.
४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५	घ.

चन्द्रे केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
०	१	०	०	०	१	०	१	०	७ मा.
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	दि.
१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	घ.

चन्द्रे शुक्रान्तरम्.

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	यो.
३	१	१	१	३	२	३	२	१	२० मा.
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्रे सूर्यान्तरम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	१	६ मा.
६	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	दि.
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	घ.

भौमे भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मा.
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	२७ दि.
३४	२	३६	६	४८	३४	३०	२१	१५	घ.
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	प.

भौमे राह्वन्तरम्.

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
१	१	१	१	०	२	०	१	०	१२ मा
२६	०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	१८ दि.
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

भौमे जीवान्तरम्.

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
१	१	१	०	१	०	०	०	१	११ मा.
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	६ दि.
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

भौमे शन्यन्तरम्.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	यो.
२	१	०	२	०	१	०	१	१	१३ मा.
३	२	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	९ दि.
१०	३१	१६	३०	१७	१५	१८	५१	१२	घ.
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

भौमे बुधान्तरम्.

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
१	०	१	०	०	०	१	१	१	११ मा.
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२७ दि.
३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	घ.
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	प.

भौमे केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मा.
८	२४	७	१२	८	२	१९	२३	२०	२७ दि.
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१	४९	घ.
३०	०	०	०	३०	०	०	३	३०	प.

भौमे शुक्रान्तरम्.

शु.	सू.	चं.	मं.	रा	बृ.	श.	बु.	के.	यो.
२	०	१	०	२	२	२	२	०	१४ मा.
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दि.
९	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

भौमे सूर्यान्तरम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मा.
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६ दि.
१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०	घ.

भौमे चन्द्रान्तरम्.

चं	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.
०	०	१	०	१	०	१	१	०	७ मा.
१७	१२	१	२९	३	२८	१२	५	१०	दि.
३०	१५	३०	०	१	४५	१५	०	३०	घ.

राहौ राह्वन्तरम्.

रा.	बृ.	श.	बु	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
४	४	५	४	१	५	१	२	१	३२ मा.
२५	९	३	१७	२६	१८	१८	२१	२६	१२ दि.
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	घ.

राहौ जीवान्तरम्.

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
३	४	४	१	४	१	२	१	४	२८ मा.
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९	२२ दि.
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	घ.

राहौ शन्यन्तरम्.

श	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	यो.
५	४	१	५	१	२	१	५	४	३४ मा.
१२	२१	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	६ दि.
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	घ.

राहौ बुधान्तरम्.

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
४	१	५	१	२	१	४	४	४	३० मा.
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	१८ दि.
३	३३	०	५४	३०	३०	४२	२४	२१	घ.

राहौ केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
०	२	०	१	०	१	१	१	१	१२ मा.
२२	२	१८	१	२२	२६	०	६	२३	१८ दि.
३	०	५४	३०	३	४२	२४	२१	३३	घ.

राहौ शुक्रान्तरम्.

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	यो.
६	१	३	२	५	४	५	१	२	३६ मा.
०	२४	०	३	१२	२७	२१	३	२	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

राहौ सूर्यान्तरम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
० / १६ / १२	० / २७ / ०	० / १८ / ५४	१ / १८ / ३६	१ / १३ / १२	१ / २१ / १८	१ / १५ / ५४	० / १८ / ५४	१ / २४ / ०	१० मा. / २४ दि. / घ.

राहौ चन्द्रान्तरम्.

चं.	मं	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.
१ / १५ / ०	१ / १ / ३०	२ / २१ / ०	२ / १२ / ०	२ / २५ / ३०	२ / १६ / ३०	१ / १ / ३०	३ / ० / ०	० / २७ / ०	१८ मा. / दि. / घ.

राहौ भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.
० / २२ / ३	१ / २६ / ४२	१ / २० / २४	१ / २९ / ५१	१ / २३ / ३३	० / २२ / ३	२ / ३ / ०	० / १८ / ५४	१ / १ / ३०	१२ मा. / १८ दि. / घ.

चन्द्रे जीवान्तरम्.

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
३ / १२ / २४	४ / १ / ३६	३ / १८ / ४८	१ / १४ / ४८	४ / ८ / ०	१ / ८ / २४	२ / ४ / ०	१ / १४ / ४८	३ / २५ / १२	२५ मा. / १८ दि. / घ.

जीवे शन्यन्तरम्.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.	बृ.	यो.
४ / २४ / २४	४ / ६ / १२	१ / २३ / १२	५ / २ / ०	१ / १५ / ३६	२ / १६ / ०	१ / २३ / १२	४ / १६ / ४८	४ / १ / ३६	३० मा. / १२ दि. / घ.

जीवे बुधान्तरम्।

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
३ / २५ / ३६	१ / १७ / ३६	४ / १६ / ०	१ / १० / ४८	२ / ८ / ०	१ / १७ / ३६	४ / २ / २४	३ / १८ / ४८	४ / ६ / १२	२७ मा. / ६ दि. / घ.

जीवे केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
० / १९ / ३६	१ / २६ / ०	० / १६ / ४८	० / २८ / ०	० / १९ / ३६	१ / २० / २४	१ / १४ / ४८	१ / २३ / १२	१ / १७ / ३६	११ मा. / ६ दि. / घ.

जीवे शुक्रान्तरम्.

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	यो.
५ / १० / ०	१ / १८ / ०	२ / २० / ०	१ / २६ / ०	४ / २४ / ०	४ / ८ / ०	५ / २ / ०	४ / १६ / ०	१ / २६ / ०	३२ मा. / दि. / घ.

जीवे सूर्यान्तरम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
० / २४ / २४	० / २३ / ०	० / १६ / ४८	१ / १३ / १२	१ / ८ / २४	१ / १५ / ३६	१ / ० / ४८	० / १६ / ४८	१ / १८ / ०	९ मा. / दि. / घ.

जीवे चन्द्रान्तरम्.

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.
१	०	२	२	२	२	०	२	०	१६ मा
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

जीवे भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.
०	१	१	१	२	०	१	०	०	११ मा.
१९	१०	१४	२३	१७	१६	२६	१६	२८	६ दि.
३६	२४	४८	१२	३६	६	०	४८	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

जीवे राह्वन्तरम्.

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
४	२	४	४	१	४	१	२	१	२८ मा.
९	२५	१६	२	२०	२४	१८	१२	२०	२४ दि.
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शनौ शन्यन्तरम्.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	यो.
५	५	२	६	१	३	२	५	४	३६ मा.
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	३ दि.
२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४	घ.
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

शनौ बुधान्तरम्.

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	[illegible]	श.	यो.
४	१	५	१	२	१	४	४	५	३२ मा.
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	९ दि.
१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५	घ.
३०	३०	०	०	०	३०	०	३०	३०	प.

शनौ केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
०	२	०	१	०	१	१	२	१	१३ मा.
२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६	९ दि.
१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१	घ.
३०	०	०	०	०	३०	०	३०	३०	प.

शनौ शुक्रान्तरम्.

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	यो.
६	१	[illegible]	२	५	५	६	४	२	३८ मा.
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	दि.
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शनौ सूर्यान्तरम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	१	१	१	१	०	१	११ मा.
१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७	१२ दि.
६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शनौ चन्द्रान्तरम्.

चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.
१	१	२	२	३	२	१	३	०	१९ मा.
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	दि.
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शनौ भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.
०	१	१	२	१	०	२	०	१	१३ मा.
२३	२९	२३	३	२६	३	६	१९	३	९ दि.
१९	५१	१२	१०	३१	६	३०	५७	१५	घ.
३०	०	५१	३८	३०	३०	०	०	०	प.

शनौ राह्वन्तरम्.

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
५	४	५	४	१	५	१	२	१	३४ मा.
३	१६	१२	२	२	२१	२१	२५	२९	६ दि.
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शनौ जीवान्तरम्.

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं	रा.	यो.
४	४	४	१	५	१	२	१	४	३० मा.
१	२४	९	२३	२	१५	१	२३	१८	१२ दि.
[illegible]	२८	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

बुधे बुधान्तरम्.

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
४	१	४	१	२	१	४	३	४	३२ मा.
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	९ दि.
४९	३४	३४	२१	१०	३४	८	३६	१६	घ.
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	प.

बुधे केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
०	१	०	०	०	१	१	१	१	११ मा
२०	२६	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	२७ दि.
४९	३०	५१	४५	४९	३२	३६	३१	३४	घ.
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	प.

बुधे शुक्रान्तरम्.

शु	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	यो.
५	१	२	१	५	४	५	४	१	३४ मा.
१०	११	२५	२९	३	१६	११	२४	९	१० दि.
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

बुधे सूर्यान्तरम्

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	१	१	१	१	०	१	१० मा.
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	६ दि.
१८	३०	५१	४	४८	२७	२१	११	०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

बुधे चन्द्रान्तरम्.

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.
१	०	२	२	२	२	०	२	०	१७ मा.
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५	दि.
३०	४५	३०	०	४५	१८	४५	०	३०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

बुधे भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.
०	१	१	१	१	०	१	०	०	११ मा.
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९	२७ दि.
४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५	प.
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	घ.

बुधे राह्वन्तरम्.

रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
४	४	४	४	१	५	१	२	१	३० मा.
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२७	१८ दि.
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

बुधे जीवान्तरम्.

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
३	४	३	५	४	१	२	१	५	२७ मा.
१८	६	२४	१७	१६	१०	८	१७	२	६ दि.
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

बुधे शन्यन्तरम्.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	यो.
५	४	१	५	१	२	१	४	४	३२ मा.
३	१७	१६	११	१८	२०	२६	२५	९	१ दि.
२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	घ.
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

केतौ केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मा.
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	५७ दि
२४	३०	२१	१५	२४	३	३६	१६	४९	घ.
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	प.

केतौ शुक्रान्तरम्.

शु.	सू.	चं	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	यो.
२	०	१	०	२	१	२	१	०	१४ मा.
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दि.
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.
०	८	०	०	०	०	०	०	०	प.

केतौ सूर्यान्तरम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मा.
[illegible]	१०	७	१८	१६	१२	१७	४	२१	६ दि.
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घ.
०	०	३	०	०	०	०	०	०	प.

केतौ भौमान्तरम्.

केतौ राह्वन्तरम्.

केतौ चन्द्रान्तरम्.

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.
०	०	१	०	१	०	०	१	०	७ मा.
१७	१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	दि.
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

केतौ भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मा.
८	२२	१६	२३	२०	८	२४	७	१२	२७ दि.
३४	३	२६	१६	४८	३४	३०	२१	१५	घ.
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	प.

केतौ राह्वन्तरम्.

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
१	१	१	१	०	२	०	१	०	१२ मा.
२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२२	१८ दि.
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

केतौ जीवान्तरम्.

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
१	१	१	०	१	०	०	०	१	११ मा.
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	६ दि.
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

केतौ शन्यन्तरम्.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	यो.
२	१	०	२	०	१	०	१	१	१३ मा.
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	९ दि.
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	घ.
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

केतौ बुधान्तरम्.

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
१	०	१	०	०	०	१	१	१	११ मा.
२०	२०	२९	१६	२९	२०	२३	१७	२६	२७ दि.
३५	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	घ.
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	प.

शुक्रे शुक्रान्तरम्.

शु	सू	चं.	मं.	रा.	बृ.	श	बु.	के.	यो.
६	२	३	२	६	५	६	५	२	४० मा.
२०	०	१	१०	०	१०	१०	२०	१०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्रे सूर्यान्तरम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	यो.
०	१	०	१	१	१	१	०	२	१२ मा
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्रे चन्द्रान्तरम्.

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.
१	१	३	२	३	२	१	३	१	२० मा.
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्रे भौमान्तरम्.

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.
०	२	१	२	१	०	२	०	१	१४ मा.
२४	३	२६	६	२४	२४	१०	२१	५	दि.
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	घ.

शुक्रे राह्वन्तरम्.

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.
५	४	५	५	२	६	१	३	२	३६ मा.
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्रे जीवान्तरम्.

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.
४	५	४	१	५	१	२	१	४	३२ मा.
८	२	१६	२	१०	१८	२०	२६	२४	दि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्रे शन्यन्तरम्.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	यो.
६	५	२	६	१	३	२	५	५	३८ मा.
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	दि.
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	घ.

शुक्रे बुधान्तरम्

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	यो.
४	१	५	१	२	१	५	४	५	३४ मा.
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	दि.
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	घ.

शुक्रे केत्वन्तरम्.

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	यो.
०	२	०	१	०	२	१	२	१	१४ मा.
२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	दि.
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	घ.

सिर्फ डाइरिक हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी में मुद्रित।